शोध मंथन Vol. XV No.IV Oct.- Dec. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

वर्तमान राजनीति और विकसित भारत की संकल्पनाः एक गहन विश्लेषण और रणनीति

प्राप्तिः 03.11.2024
स्वीकृतः 26.12.2024

85

डॉ. अशोक कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)
संघटक राजकीय महाविद्यालय
मीरापुर बांगर (उ.प्र.)
ईमेलः ashokpanwar1479@gmail.com

सारांश

भारत,एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था और बहुआयामी लोकतंत्र के रूप में, 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की महत्वाकांक्षी योजना लेकर चल रहा है। यह लक्ष्य न केवल आर्थिक सुधारों तक सीमित है,बल्कि इसमें सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय स्थिरता और जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार शामिल हैं।''वर्तमान राजनीति और विकसित भारत की संकल्पना'' विषय पर यह शोध पत्र समकालीन राजनीतिक संरचना, नीति–निर्माण की प्रक्रियाएँ, और भारत की विकास यात्रा को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का गहन विश्लेषण करता है।

यह अध्ययन भारत के सामाजिक और आर्थिक ढाँचे को पुनः संगठित करने, बुनियादी ढाँचे के विकास को गति देने, और नीतिगत सुधारों के माध्यम से विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने पर केंद्रित है। शोध में प्रमुख सरकारी योजनाओं जैसे डिजिटल इंडिया, स्वच्छ भारत अभियान, और आत्मनिर्भर भारत का विश्लेषण किया गया है, जिनका उद्देश्य नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाना है। इसके साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास में सुधार के लिए नई दिशा–निर्देश सुझाए गए हैं।

यह शोध पत्र आर्थिक विकास के साथ–साथ खुशहाली–प्रेरित विकास मॉडल की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। भारत के लिए खुशहाली सूचकांक में अपने प्रदर्शन को सुधारने उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि GDP को बढ़ाना। यह पेपर यह भी बताता है कि भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिएः

- सामाजिक असमानता को कम करना और समावेशी विकास सुनिश्चित करना।
- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच आर्थिक असंतुलन को दूर करना।
- पर्यावरणीय स्थिरता को प्राथमिकता देना और हरित ऊर्जा को अपनाना।
- शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना।

इस शोध का उद्देश्य भारत की वर्तमान राजनीतिक प्रक्रियाओं और नीतियों को गहराई से समझना और 2047 के लिए एक प्रभावी और स्थायी रोडमैप तैयार करना है। यह अध्ययन न केवल भारत की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करता है, बल्कि इसे एक समृद्ध और समावेशी राष्ट्र में बदलने के लिए ठोस और व्यावहारिक समाधान भी प्रस्तुत करता है। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि यदि नीतियों में पारदर्शिता, नागरिक सहभागिता और शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में व्यापक निवेश किया जाए, तो भारत निश्चित रूप से ''विकसित भारत'' के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

परिचय

भारत, जो विविधता और एकता का अद्वितीय उदाहरण है, विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान रखता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत ने विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। यह यात्रा चुनौतीपूर्ण रही है, लेकिन देश ने इन चुनौतियों का सामना करते हुए कई उपलब्धियाँ भी हासिल की हैं। अब, भारत का लक्ष्य 2047 तक एक ''विकसित राष्ट्र'' का दर्जा प्राप्त करना है। (सिन्हा, 2020, पृष्ठ 45)।

विकसित भारत की संकल्पनाः

विकसित भारत का लक्ष्य केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है; यह एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान करता है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक न्याय जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया है। यह न केवल भारत की आर्थिक शक्ति को बढ़ाने का प्रयास है, बल्कि नागरिकों की खुशहाली और जीवन की गुणवत्ता में सुधार का भी एक महत्वपूर्ण एजेंडा है।

विकसित राष्ट्र की परिभाषाः

''विकसित राष्ट्र'' की कोई सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है, लेकिन इसे आमतौर पर निम्नलिखित मानकों के आधार पर मापा जाता हैः

1. **उच्च आर्थिक प्रदर्शनः** प्रति व्यक्ति आय, GDP और HDI जैसे संकेतकों में उच्च रैंकिंग।
2. **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्यः** शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच और गुणवत्ता।
3. **तकनीकी प्रगति और नवाचारः** उच्चस्तरीय अनुसंधान, विकास और डिजिटल बुनियादी ढाँचे का विस्तार।
4. **सामाजिक समानताः** सभी वर्गों का समान अवसर औरा अधिकार सुनिश्चित करना।
5. **पर्यावरणीय स्थिरताः** सतत विकास और हरित ऊर्जा का उपयोग।

वर्तमान परिप्रेक्ष्यः

आज भारत विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और 2030 तक इसे तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की संभावना है। साथ ही, भारत अपने स्टार्टअप इकोसिस्टम और डिजिटल प्रगति के लिए भी वैश्विक स्तर पर पहचाना जा रहा है।

- **जनसांख्यिकी लाभांशः** भारत की 65% आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है, जो इसे युवा और ऊर्जा संपन्न राष्ट्र बनाती है।

• **सरकारी योजनाएँः** डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और स्वच्छ भारत जैसी पहलों ने विकास की गति को तेज किया है।

• **चुनौतियाँः** हालांकि, असमानता, भ्रष्टाचार और पर्यावरणीय समस्याएँ विकास की राह में बड़ी बाधाएँ बनी हुई हैं।

शोधा का उद्देश्य और प्रासंगिकताः

यह शोध ''वर्तमान राजनीति और विकसित भारत की संकल्पना'' को गहराई से समझने का प्रयास है।

प्रमुख उद्देश्यः

1. भारत के राजनीतिक और नीतिगत ढाँचे का विश्लेषण।
2. 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लिए आवश्यक आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय सुधारों की पहचान।
3. खुशहाली–प्रेरित विकास मॉडल की प्रासंगिकता और इसकी भारत में संभावनाएँ।

यह शोध केवल समस्याओं की पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ठोस समाधान और रणनीतियाँ भी प्रस्तुत की गई हैं। यह स्पष्ट करता है कि कैसे नीतिगत सुधार, शासन में पारदर्शिता और नागरिक सहभागिता भारत को वैश्विक मंच पर एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित कर सकते हैं। 2047 तक विकसित भारत की यात्रा केवल एक लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह एक संकल्प है जो भारत को एक सशक्त, समावेशी और खुशहाल समाज बनाने की दिशा में अग्रसर करता है। यह शोध इस यात्रा के लिए एक प्रभावी रोडमैप तैयार करने की दिशा में एक प्रयास हैं।

समकालीन राजनीति का परिदृश्य भारत

एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में, अपनी राजनीतिक व्यवस्था की जटिलता और विविधता के लिए जाना जाता है। स्वतंत्रता के बाद से, भारत ने एक संघीय ढाँचे के तहत लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को अपनाया है। यह प्रणाली नागरिकों के अधिकारों, समानता और समावेशिता की गारंटी देती है। हालांकि, भारतीय राजनीति वर्तमान समय में कई महत्वपूर्ण चुनौतियों और अवसरों का सामना कर रही है।

भारतीय राजनीति की संरचना और भूमिका भारतीयः राजनीति का आधार संविधान में निहित है, जो देश के नागरिकों के लिए एक मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करता है।

• **संघीय संरचनाः** भारत का राजनीतिक ढाँचा संघीय हैं, जिसमें शक्तियाँ केंद्र और राज्यों के बीच विभाजित की गई हैं। राज्यों को अपनी स्थानीय जरूरतों के अनुसार नीतियाँ बनाने का अधिकार है, जबकि केंद्र सरकार राष्ट्रीय नीतियाँ और सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है।

• **लोकतंत्र का आधारः** भारतीय राजनीति ''जनता द्वारा, जनता के लिए और जनता के माध्यम से'' की अवधारणा पर आधारित है। संसद, विधानसभाएँ और न्यायपालिका तीन प्रमुख स्तंभ हैं, जो शासन को संतुलित करते हैं।

विशेषताएँ:

1. **संसदीय लोकतंत्र:** भारत की राजनीतिक प्रणाली संसदीय है, जिसमें लोकसभा और राज्यसभा दो सदनों के माध्यम से विधायी कार्य होते हैं।

2. **चुनाव प्रणाली:** भारत में प्रत्येक पाँच वर्षों में चुनाव होते हैं, जो नागरिकों को अपने प्रतिनिधि चुनने का अवसर देते हैं।

3. **स्थानीय शासन:** पंचायती राज व्यवस्था और शहरी निकाय स्थानीय स्तर पर नागरिकों की भागीदारी को सुनिश्चित करते हैं।

समकालीन राजनीतिक चुनौतियाँ: भारतीय राजनीति में प्रगति के बावजूद, वर्तमान समय में कई गंभीर चुनौतियाँ हैं, जो विकास में बाधाएँ उत्पन्न करती हैं।

1. भ्रष्टाचार और प्रशासनीक पारदर्शिता की कमी

• **स्थिति:** भ्रष्टाचार भारतीय राजनीति का एक प्रमुख मुद्दा है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की 2023 रिपोर्ट के अनुसार, भारत का भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (CPI) 40 है।

• **परिणाम:** भ्रष्टाचार न केवल संसाधनों की बर्बादी है, बल्कि यह जनता के विश्वास को भी कमजोर करता है।

• **उदाहरण:** सार्वजनिक योजनाओं में वित्तीय गड़बड़ियाँ और ठेकेदारों के साथ मिलीभगत आम समस्याएँ हैं।

2. जातिवाद और सांप्रदायिकता

• **स्थिति:** जातिवाद और धार्मिक विवाद भारतीय समाज को विभाजित करते हैं।

• **परणिाम:** यह सामाजिक असमानता को बढ़ावा देता है और विकास की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करता है।

• **उदाहरण:** जाति आधारित राजनीति और सांप्रदायिक हिंसा ने समाज की एकता को कमजोर किया है।

3. नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन

• **स्थिति:** कई सरकारी योजनाएँ प्रभावी ढंग से लागू नहीं हो पाती खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

• **परिणाम:** योजनाओं का लाभ सही लाभार्थियों तक नहीं पहुँचता।

• **उदाहरण:** मनरेगा जैसी योजनाओं में वित्तीय अनियमितताओं की शिकायतें आम हैं।

सकारात्मक पहल और सुधारों की दिशा: समकालीन भारतीय राजनीति में सुधार और नवीनीकरण के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं।

1. डिजिटल प्रशासन

• **डिजिटल इंडिया अभियान:** इस पहल ने प्रशासनिक प्रक्रियाओं को पारदर्शी बनाया है।

• **परिणाम:** डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन सेवाओं ने भ्रष्टाचार को कम करने में मदद की है।

2. नागरिक सहभागिता

• **सार्वजनिक भागीदारी:** लोकपाल और आरदीआई अधिनियम जैसे कानूनों ने नागरिकों को सशक्त बनाया है।

- **परिणामः** पारदर्शिता बढ़ने से जनता का विश्वास बहाल हुआ है।

3. नीतिगत सुधार

- **आत्मनिर्भर भारतः** घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहन और रोजगार सृजन।
- **स्वच्छ भारत अभियानः** स्वच्छता में सुधार और ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ाई है। (जैन, 2019, पृष्ठ 75)।

राजनीति और नीति निर्माण में नागरिकों की भूमिकाः भारतीय लोकतंत्र में नागरिकों की भागीदारी राजनीतिक सुधारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कारक है।

- **मतदान का महत्वः** चुनाव प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी शासन में सुधार ला सकती है।
- **सार्वजनिक जागरूकताः** नागरिकों को नीतियों की जानकारी होनी चाहिए ताकि वे जिम्मेदार सरकारों का चयन कर सकें।

वैश्विक संदर्भ में भारतीय राजनीतिः भारत जो विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, वैश्विक स्तर पर अपने लोतांत्रिक मूल्यों के लिए सम्मानित है।

- **चुनौतियाँः** भारत को अपनी आंतरिक समस्याओं को सुलझाकर एक आदर्श लोकतंत्र के रूप में प्रस्तुत करना होगा।
- **अवसरः** G20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी और संयुक्त राष्ट्र में सक्रिय भागीदारी भारत की वैश्विक स्थिति को सुदृढ़ कर रही है।

सुधारों की आवश्यकताः समकालीन राजनीति में निम्नलिखित सुधारों की अत्यंत आवश्यकता हैः–

1. पारदर्शिता और जवाबदेहीः डिजिटल उपकरणों और तकनीकी नवाचारों का उपयोग करके भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जा सकता है।

2. राजनीतिक शिक्षाः नागरिकों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान चलाए जाने चाहिए।

3. विधायी सुधारः कानून बनाने और उन्हें लागू करने की प्रक्रिया को तेज और प्रभावी बनाया जाए।

भारतीय राजनीति, अपनी जटिलताओं और विविधता के बावजूद, देश के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समकालीन राजनीति की चुनौतियों को समझकर और प्रभावी समाधान अपनाकर, भारत 2047 तक ''विकसित राष्ट्र'' का दर्जा प्राप्त करने की दिशा में तेजी से अग्रसर हो सकता है। यह केवल राजनीतिक प्रणाली के सुधार पर निर्भर नहीं करता, बल्कि नागरिक सहभागिता और शासन में पारदर्शिता को बढ़ावा देने पर भी केंद्रित है।(सिन्हा, के. पृष्ठ 45)।

विकसित भारत के मानदंड

आर्थिक समृद्धि, बुनियादी ढाँचा और खुशहाली।

आर्थिक समृद्धिः भारत की GDP वर्तमान में $3.5 ट्रिलियन है, और अनुमान है कि 2030 तक यह तीसरी सबसे बड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्था बन सकती है। प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने के लिए 8% वार्षिक वृद्धि दर को बनाए रखना आवश्यक है।

तालिका 1: भारत और विकसित देशों की प्रति व्यक्ति आय और GDP तुलना

देश	GDP (**$ट्रिलियन**)	**प्रति व्यक्ति आय** ($) HDI	**रैंक देश**
भारत	3.5	21,00	132
अमेरिका	26.7	63,543	17
चीन	18.0	12,551	85

बुनियादी ढाँचा और औद्योगिकीकरण: बुनियादी ढाँचे का विकास, जैसे कि परिवहन नेटवर्क, ऊर्जा और डिजिटल कनेक्टिविटी, भारत के औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक है। परिवहन, बिजली और इंटरनेट कनेक्टिविटी पर केंद्रित निवेश से न केवल आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ेंगी, बल्कि रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होंगे।

- **डेटा बिंदु:** सरकार ने 2025 तक $1.5 ट्रिलियन का बुनियादी ढाँचा निवेश लक्ष्य निर्धारित किया है।

जीवन की गुणवत्ता और खुशहाली: अभी भी भारत का स्थान खुशहाली सूचकांक में 126वाँ है। यह स्पष्ट करता है कि केवल आर्थिक विकास पर्याप्त नहीं है; शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा में सुधार आवश्यक हैं। (वैश्विक खुशहाली सूचकांक में भारत का स्थान (2024))।

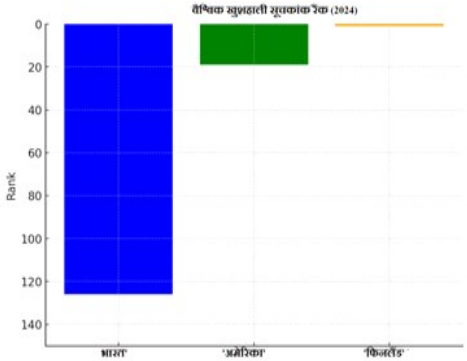

चार्ट 1: (2024)

3. प्रमुख चुनौतियाँ और समाधान

शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय स्थिरता

3.1 शिक्षा और कौशल विकास: भारत में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और कौशल विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। 'नई शिक्षा नीति 2020' ने व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल–निर्माण पर जोर दिया है, जो रोजगार सृजन में सहायक होगा।

- **डेटा:** वर्तमान में, भारत में केवल 25% युवाओं के पास आवश्यक तकनीकी कौशल हैं, जो औद्योगिक देशों की तुलना में काफी कम है।
- **सुझाव:** शिक्षा और कौशल विकास के लिए बजट आवंटन को GDP के 6% तक बढ़ाया जाए। (नई शिक्षा नीति 2020)।

तालिका 2: भारत और अन्य देशों में शिक्षा बजट का GDP प्रतिशत

देश	**शिक्षा बजट (% GDP)**
भारत	3.1
अमेरिका	5.0
दक्षिण कोरिया	6.8

स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार: विकसित राष्ट्र बनने के लिए नागरिकों की स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच में सुधार आवश्यक है। आयुष्मान भारत योजना के तहत 50 करोड़ से अधिक लोगों को स्वास्थ्य सेवा का लाभ मिला है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी अभी भी बनी हुई है।

- **सुझाव:** ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और मोबाइल क्लीनिक का विस्तार।

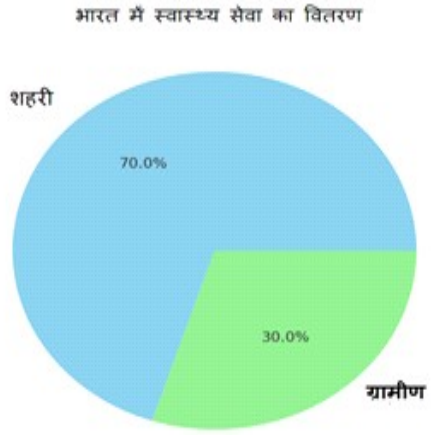

चार्ट 2: भारत में स्वास्थ्य सेवा का वितरण (शहरी बनाम ग्रामीण)

पर्यावरणीय स्थिरता: पर्यावरण संरक्षण के बिना सतत विकास संभव नहीं है। नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों जैसे सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा में निवेश से भारत का ऊर्जा संतुलन बेहतर हो सकता है।

- **डेटा:** 2030 तक 450 GW नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य रखा गया है।
- **सुझाव:** हरित ऊर्जा परियोजनाओं में सरकारी और निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

विकसित भारत के लिए रणनीतिक समाधान

नीतिगत सुधार और समावेशी विकास

समावेशी विकास और सामाजिक न्याय: समावेशी विकास के लिए सभी वर्गों को समान अवसर मिलना चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित सुधार आवश्यक है।

- **लैंगिक समानता:** महिलाओं के लिए शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जाए।
- **क्षेत्रीय असमानता:** शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच असमानता को दूर करना आवश्यक है।

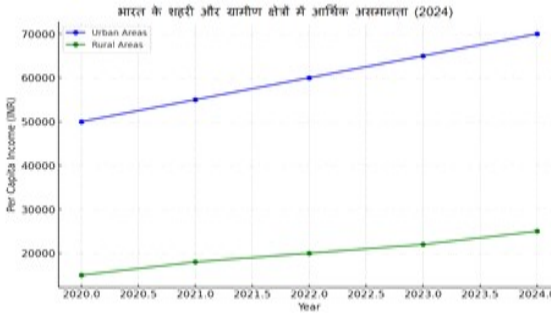

चार्ट 3: भारत के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक असमानता (2024)

डिजिटल समावेशन और नवाचार: डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने डिजिटल सेवाओं तक पहुँच बढ़ाई है। UPI के माध्यम से मासिक $180 बिलियन का लेन–देन हो रहा है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था में डिजिटलीकरण की दिशा में प्रगति हो रही है।

- **सुझाव:** ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का विस्तार।

युवा सशक्तिकरण और रोजगार सृजन: युवाओं के कौशल विकास के साथ रोजगार सृजन के लिए विशेष पहल की आवश्यकता है। स्किल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रम इस दिशा में सहायक हो सकते हैं।

कार्यक्रम	लक्ष्य	उपलब्धियाँ
स्किल इंडिया	10मिलियन युवाओं को प्रशिक्षण	1.5 मिलियन प्रशिक्षित (2023)
मेक इन इंडिया	घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना	2023 में GDP का 17.4%

निष्कर्ष और नीति अनुशंसाएँ

मुख्य निष्कर्ष: विकसित भारत का लक्ष्य एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें आर्थिक विकास, सामाजिक उत्थान और पर्यावरणीय स्थिरता की एक संतुलित रणनीति अपनाई जानी चाहिए।

नीति अनुशंसाएँ:

1. **शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश:** का 6 शिक्षा और 3 स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च किया जाए।
2. **डिजिटल सेवाओं का विस्तार:** ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सेवाओं की पहुँच बढ़ाने के लिए डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम शुरू किए जाएँ।
3. **पर्यावरणीय स्थिरता:** हरित ऊर्जा में निवेश को बढ़ावा देने के लिए सरकार और निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग।
4. **समावेशी विकास:** आय असमानता और सामाजिक विभाजन को कम करने के लिए लक्षित नीतियाँ बनाई जाएँ।

भविष्य की दिशा: 2047 तक भारत को एक समृद्ध, खुशहाल और समावेशी राष्ट्र बनाने के लिए ठोस नीति सुधार, शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश और आर्थिक सुधारों की आवश्यकता है। इसके साथ देश को एक स्थिर और सशक्त राष्ट्र बनाने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होगी।

संदर्भः

1. सिन्हा, के.(2020). भारतीय राजनीति की संरचना और लोकतंत्र का भविष्य, नई दिल्लीः पब्लिकेशन हाउस।
2. शर्मा, आर.(2018). आधुनिक भारत में आर्थिक सुधार और उनका प्रभाव, मुंबईः इकोनॉमिक्स पब्लिशिंग।
3. जैन, पी.(2019). डिजिटल इंडिया और ग्रामीण विकास, दिल्लीः ग्रीन पब्लिशिंग हाउस।
4. तिवारी, एस.(2021). स्वच्छ भारत अभियान का समाज पर प्रभाव, पटनाः सामाजिक पब्लिशर्स।
5. मिश्रा, ए.(2020). शिक्षा और कौशल विकास के माध्यम से समाज का विकास, पटनाः एजुकेशनल पब्लिशर्स।
6. विश्व खुशहाली रिपोर्ट 2023, न्यूयॉर्कः यूनाइटेड नेशंस।
7. नीति आयोग। (2023). विकसित भारत का रोडमैप 2047, नई दिल्लीः नीति आयोग।